विचार बिन्दु

आज के कष्ट का सामना करने वाले के पास आगामी कल के कष्ट आने से घबराते हैं। –अज्ञात

भारत के गिग श्रमिक: न्याय और मानवीय गरिमा के आकांक्षी

बेरोज़गारी भारत की सबसे बड़ी समस्याओं में से एक है। आज़ादी के बाद से हर राजनीतिक दल और हर सरकार ने इस समस्या को अपनी-अपनी तरह से हल करने के सुझाव दिए और प्रयास किए, लेकिन मोटे तौर पर यह समस्या अभी भी बरक़रार है। 'मोटे तौर' पर अभिव्यक्ति का प्रयोग मैं जानबूझकर कर रहा हूं। असल में जब हम रोज़गार की बात करते हैं तो मुख्यत: हमारा आशय ऐसी नौकरी से होता है जिसमें आप किसी एक जगह बैठकर दस से पांच बजे तक काम करें। या इसी तरह की कोई और परिकल्पना होती है। नौकरी के सिवा किया जाने वाला काम हमें रोज़गार लगता ही नहीं है। लेकिन यह भी एक यथार्थ है कि कोई भी सरकार सभी आकांक्षियों को नौकरी नहीं दे सकती। जो लोग अपनी आजीविका के प्रति गम्भीर हैं वे नौकरी से इतर भी कुछ करते हैं और अपना जीवन यापन करते हैं। बहुत बार ऐसे लोग वह सब भी हासिल कर लेते हैं जो कोई भी नौकरी उन्हें नहीं दे सकती थी। लेकिन ऐसे लोग बहुत ज़्यादा नहीं होते हैं।

इधर इक्कीसवीं सदी के भारत में रोज़गार का एक नया चेहरा बहुत तेज़ी से उभरा है। आप किसी भी ठीक-ठाक सी आबादी वाले कस्बे में, नगर में या महानगर में ऐसे लोगों को देख सकते हैं को अपने दोपहिया वाहन और स्मार्टफ़ोन के माध्यम से सम्मानजनक आजीविका जुटा कर जीवन यापन कर रहे हैं। किसी भी लोकप्रिय रेस्तरां के बाहर स्विगी, ज़ोमैटो जैसे नाम लिखे बैग़ों वाले अनगिनत वाहन आपको नज़र आ जाएंगे। एक नागरिक के रूप में भी हम पाते हैं कि इस तरह की सेवा देने वालों ने हमारा जीवन बहुत सुगम कर दिया है। दिन हो या रात, कभी भी हम अपना मनपसंद ख़ाना अपने घर पर मंगवा लेते हैं। न केवल खाना, परचूनी सामग्री, फल सब्ज़ियां कुछ भी मंगवा लेते हैं। यही नहीं, अगर हमें कहीं कोई दस्तावेज़, पैकेट या कुछ भी भेजना है तो सुगमता से भेज देते हैं। इधर कुछ बरसों से उबर, ओला जैसी सेवाओं ने हमारे स्थानीय यातायात का चेहरा भी बदल कर रख दिया है। आपको अपने सौंदर्य को संवारना है या घर की किसी छोटी-मोटी तकनीकी असुविधा से मुक्ति पानी है, यहां तक कि कुछ देर के लिए किसी सेवा कर्मी की ज़रूरत हो- सब आसानी से हो जाता है। ये जो लोग इस तरह की सेवाएं हमें प्रदान करते हैं ये सभी नए भारत की तेज़ी से उभरती गिग इकोनॉमी के चेहरे हैं। आज भारत दुनिया के सबसे बड़े गिग वर्कर फोर्स वाले देशों में अग्रणी है। नीति आयोग की ताज़ा रिपोर्ट के अनुसार, सन 2030 तक भारत में गिग श्रमिकों की संख्या 2.35 करोड़ तक पहुंच जाएगी।

भारत में गिग इकोनॉमी का यह त्वरित विकास जनसांख्यिकी और बदलती कार्य संस्कृति के मेल का अनुपम उदाहरण है। सस्ते और सुलभ डेटा युक्त स्मार्टफ़ोन ने इस प्लेटफोर्म इकॉनॉमी को देश के दूर दराज़ के इलाकों तक पहुंचा दिया है। कोविड-19 ने इस प्रक्रिया को और गति दी और संकट से जूझते लोगों को ख़ुद को बचाए रखने का एक मज़बूत विकल्प भी दिया। आज भारत का युवा नौकरी तलाश करने की बजाय किसी एप पर ऑनलाइन काम करके अपना पेट भरने लगा है। भले ही सरकारें सबको उनका मनचाहा रोज़गार सुलभ नहीं करा सकी, इस नई व्यवस्था ने बहुतों के सामने खड़ी बेरोज़गारी की विकराल समस्या को जैसे ख़त्म कर दिया। मैं प्राय: इस तरह की सेवाएं लेता हूं और हर बार यह भी प्रयास करता हूं कि जो ये सेवाएं दे रहे हैं उनसे उनके अनुभव जानूं। मैंने पाया है कि जो निष्ठापूर्वक काम करते हैं वे संतोषप्रद कमाई भी कर लेते हैं और खुश हैं।

इस गिग इकोनॉमी सिस्टम की एक ख़ासियत इसका लचीलापन है। आप अपना कोई और काम करते हुए, मसलन युवा पढ़ाई करते हुए या गृहिणी अपने पारिवारिक दायित्व निबाहते हुए भी पैसा कमा सकते हैं। आप अपने काम के घण्टे और काम का समय ख़ुद निश्चित कर सकते हैं। आंकड़े बताते हैं कि भारत में इस गिग वर्कफोर्स में महिलाओं की हिस्सेदारी भी 28 प्रतिशत तक पहुंच चुकी है। यह जानना भी कम रोचक नहीं है कि यह क्षेत्र कुशल, अकुशल सभी तरह के लोगों को रोज़गार सुलभ करा रहा है। घरेलू सेवा करने वालों से लगाकर केवल वाहन चलाकर इधर से उधर सामान पहुंचाने वालों से लगाकर सॉफ्ट्वेयर डेवलपमेण्ट, ग्राफ़िक डिज़ाइनिंग और मार्केटिंग डिज़ाइन जैसे काम भी इस तरह से किए जा रहे हैं।

भारत दुनिया की तीसरी सबसे बड़ी अर्थ व्यवस्था बन गया है या बनने वाला है तो हमारा ध्यान केवल ट्रिलियन वाले आंकड़ों पर होता है। बेशक हमारे देश में कुछ लोगों का वैभव चमत्कारी रूप से बढ़ा है, लेकिन इस बात को समझा जाना ज़रूरी है कि अंतत: किसी देश की असल कामयाबी उस देश के सबसे नीचे वाले पायदान पर खड़े व्यक्ति की खुशहाली से ही प्रकट होगी।

लेकिन इस व्यवस्था में सब कुछ उजला-उजला हो ऐसा भी नहीं है। यह काम करने वालों को समय पर माल पहुंचाने के दबाव में अंधाधुंध वाहन चलाने पड़ते हैं और इस तरह उन्हें हर पल ख़तरों से खेलना पड़ता है। उपभोक्ता को इस बात से प्राय: कोई लेना-देना नहीं रहता है कि जो व्यक्ति उसका मंगाया सामान लेकर आ रहा है उसे ट्रैफ़िक जाम से भी जूझना पड़ा होगा। वह तो दस मिनिट में सामान चाहता है। असल में इस व्यवस्था के सारे सूत्र मनुष्यों के हाथ में न होकर एल्गोरिद्म के हाथ में हैं। उसी से यह निर्धारित होता है कि किसको काम मिलेगा और किसका काम छूट जाएगा। हमारी दी हुई रेटिंग या कोई तकनीकी गड़बड़ किसी की भी रोज़ी रोटी छीन सकती है। इसके अलावा, इस तरह का काम करने वालों के पास कोई सामाजिक सुरक्षा तो है ही नहीं। इनसे काम करवाने वाली कम्पनियां प्रॉविडेण्ट फण्ड, बीमा, पेंशन और सवैतनिक अवकाश जैसे लाभ इन्हें देने से बचती हैं। एक रिपोर्ट बताती है कि लगभग 90 प्रतिशत गिग वर्कर्स के पास आपातकालीन स्थितियों के लिएकोई वित्तीय बचत ही नहीं है।

लेकिन ऐसा भी नहीं है कि सरकारों का ध्यान इस तरफ नहीं गया है। राजस्थान देश का ऐसा पहला राज्य है जिसने गिग वर्कर्स (पंजीयन और कल्याण) अधिनियम पारित किया है। इस व्यवस्था की सबसे क्रांतिकारी विशेषता कल्याण शुक्ल है। प्रत्येक ट्रांजेक्शन पर एक से दो प्रतिशत का मामूली शुल्क लिया जाता है जो सीधे एक समर्पित कल्याण कोष में जमा होता है और इससे इन गिग वर्कर्स की सामाजिक सुरक्षा सुनिश्चित की जाती है। यही नहीं इस तरह का काम करने वाला अपनी यूनिक आईडी के माध्यम से एक कंपनी छोड़कर दूसरी कंपनी में जाने पर अपने लाभ बनाए रख सकता है। इसे बेनेफ़िट पोर्टेबिलिटी कहा जाता है। इस अधिनियम के तहत एग्रीगेटर कम्पनियों को अपने प्लेटफॉर्म पर सक्रिय सभी श्रमिकों का डेटा सरकार के साथ साझा करना ज़रूरी कर दिया गया है। इससे कंपनियों की मनमानी पर लगाम कसी जा सकी है। इस अधिनियम में यह भी प्रावधान है कि अगर कोई कंपनी इस अधिनियम के प्रावधानों की अनदेखी करती है तो उस पर भारी ज़ुर्माना लगाया जा सकता है। यह एक सराहनीय पहल है। वैसे पूरी दुनिया में गिग वर्कर्स के अधिकारों पर विमर्श होरहा है। ब्रिटेन की सुप्रीम कोर्ट ने उबर ड्राइवरों को श्रमिक का दर्ज़ा दे दिया है, भारत में भी सामाजिक सुरक्षा संहिता 2020 के क्रियान्वयन का इंतज़ार है। यह जानना सुखद है कि भारत सरकार ने गिग वर्कर्स को सामाजिक सुरक्षा योजनाओं का लाभ देने के लिए श्रम संहिता के सामाजिक कोड 2020 के दायरे में नए नियमों का ड्राफ़्ट ज़ारी किया है। इन नियमों के लागू हो जाने से इन कार्मिकों को न्यूनतम मज़दूरी, स्वास्थ्य लाभ, व्यावसायिक और सामाजिक सुरक्षा जैसे ज़रूरी अधिकार मिल जाएंगे।

समग्रत: यह गिग इकोनॉमी पूरी दुनिया के लिए और ख़ास तौर पर भारत के लिए बहुत बड़ा अवसर है। असल में जब हम यह चर्चा करते हैं कि भारत दुनिया की तीसरी सबसे बड़ी अर्थ व्यवस्था बन गया है या बनने वाला है तो हमारा ध्यान केवल ट्रिलियन वाले आंकड़ों पर होता है। बेशक हमारे देश में कुछ लोगों का वैभव चमत्कारी रूप से बढ़ा है, लेकिन इस बात को समझा जाना ज़रूरी है कि अंतत: किसी देश की असल कामयाबी उस देश के सबसे नीचे वाले पायदान पर खड़े व्यक्ति की खुशहाली से ही प्रकट होगी। हमारा गिग वर्कर केवल एक यांत्रिक एल्गोरिद्म का अंश न होकर एक जीता-जागता व्यक्ति है और उसके भी अपने अधिकार और सपने हैं। इन्हें बचाने का काम अंतत: सरकार को ही करना होगा। बेशक तकनीक ने हम सबका जीवन सुखद बनाया है, जिन्हें रोज़गार की तलाश है उनको रोज़गार भी दिया है। लेकिन यह हम सबकी साझी ज़िम्मेदारी है कि इस तकनीक को शोषण का औज़ार बनने से रोकें। बेशक लोगों को काम मिले, उनसे मुकम्मल सेवा की अपेक्षा की जाए, लेकिन इसी के साथ यह भी कि किसी भी तरह उनका शोषण न हो।

–अतिथि संपादक,
डॉ. दुर्गाप्रसाद अग्रवाल
(शिक्षाविद और साहित्यकार)

सोमनाथ : अटूट आस्था के 1000 वर्ष (1026-2026)

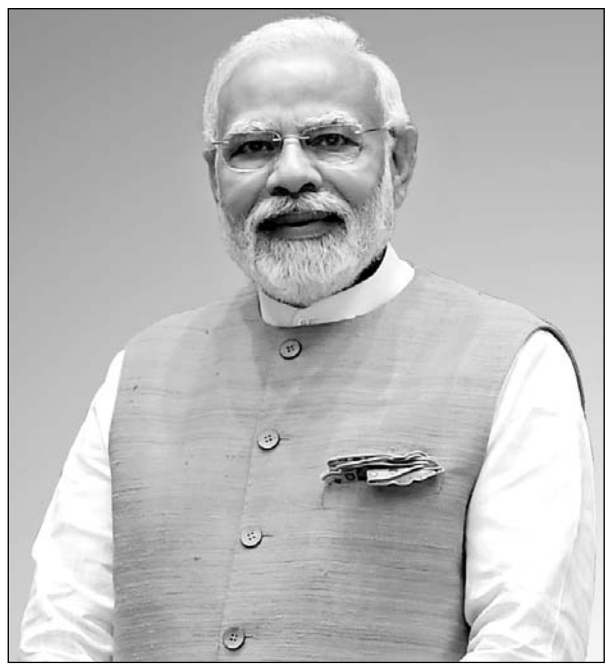

प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी

सोमनाथ... ये शब्द सुनते ही हमारे मन और हृदय में गर्व और आस्था की भावना भर जाती है। भारत के पश्चिमी तट पर गुजरात में प्रभास पाटन नाम की जगह पर स्थित सोमनाथ, भारत की आत्मा का शाश्वत प्रस्तुतिकरण है। द्वादश ज्योतिर्लिंग स्तोत्रम में भारत के 12 ज्योतिर्लिंगों का उल्लेख है। ज्योतिर्लिंगों का वर्णन इस पंक्ति से शुरू होता है...सौराष्ट्रे सोमनाथं च...यानि ज्योतिर्लिंगों में सबसे पहले सोमनाथ का उल्लेख आता है। ये इस पवित्र धाम की सभ्यतागत और आध्यात्मिक महत्ता का प्रतीक है। शास्त्रों में ये भी कहा गया है :

सोमलिङ्गं नरो दृष्ट्वा सर्वपापैः प्रमुच्यते।

लभते फलं मनोवाञ्छितं मृतः स्वर्गं समाश्रयेत्॥

अर्थात्, सोमनाथ शिवलिंग के दर्शन से व्यक्ति अपने सभी पापों से मुक्त हो जाता है। मन में जो भी पुण्य कामनाएं होती हैं, वो पूरी होती हैं और मृत्यु के बाद आत्मा स्वर्ग को प्राप्त होती है। दुर्भाग्यवश, यही सोमनाथ, जो करोड़ों लोगों की श्रद्धा और प्रार्थनाओं का केंद्र था, विदेशी आक्रमणकारियों का निशाना बना, जिनका उद्देश्य विध्वंस था।

वर्ष 2026 सोमनाथ मंदिर के लिए बहुत महत्व रखता है क्योंकि इस महान तीर्थ पर हुए पहले आक्रमण के 1000 वर्ष पूरे हो रहे हैं। जनवरी 1026 में गजनी के महमूद ने इस मंदिर पर बड़ा आक्रमण किया था, इस मंदिर को ध्वस्त कर दिया था। यह आक्रमण आस्था और सभ्यता के एक महान प्रतीक को नष्ट करने के उद्देश्य से किया गया एक हिंसक और बर्बर प्रयास था। सोमनाथ हमला मानव इतिहास की सबसे बड़ी त्रासदियों में शामिल है। फिर भी, एक हजार वर्ष बाद आज भी यह मंदिर पूरे गौरव के साथ खड़ा है।

साल 1026 के बाद समय-समय पर इस मंदिर को उसके पूरे वैभव के साथ पुन:निर्मित करने के प्रयास जारी रहे। मंदिर का वर्तमान स्वरूप 1951 में आकार ले सका। संयोग से 2026 का यही वर्ष सोमनाथ मंदिर के पुनर्निर्माण के 75 वर्ष पूरे होने का भी वर्ष है। 11 मई 1951 को इस मंदिर का पुनर्निर्माण सम्पन्न हुआ था। तत्कालीन राष्ट्रपति डॉ. राजेंद्र प्रसाद की उपस्थिति में हुआ वो समारोह ऐतिहासिक था, जब मंदिर के द्वार दर्शनों के लिए खोले गए थे।

1026 में एक हजार वर्ष पहले सोमनाथ पर हुए पहले आक्रमण, वहां के लोगों के साथ की गई क्रूरता और विध्वंस का वर्णन अनेक ऐतिहासिक स्त्रोतों में विस्तार से मिलता है। जब इन्हें पढ़ा जाता है तो हृदय कांप उठता है। हर पंक्ति में क्रूरता के निशान मिलते हैं, ये ऐसा दु:ख है जिसकी पीड़ा इतने समय बाद भी महसूस होती है।

हम कल्पना कर सकते हैं कि इसका उस दौर में भारत पर और लोगों के मनोबल पर कितना गहरा प्रभाव पड़ा होगा। सोमनाथ मंदिर का आध्यात्मिक महत्व बहुत ज्यादा था। ये बड़ी संख्या में लोगों को अपनी ओर खींचता था। ये एक ऐसे समाज की प्रेरणा था जिसकी आर्थिक क्षमता भी बहुत सशक्त थी। हमारे समुद्री व्यापारी और नाविक इसके वैभव की कथाएं दूर-दूर तक ले जाते थे।

सोमनाथ पर हमले और फिर गुलामी के लंबे कालखंड के बावजूद आज मैं पूरे विश्वास के साथ और गर्व से ये कहना चाहता हूं कि सोमनाथ की गाथा विध्वंस की कहानी नहीं है। ये पिछले 1000 साल से चली आ रही भारत माता की करोड़ों संतानों के स्वाभिमान की गाथा है, ये हम भारत के लोगों की अटूट आस्था की गाथा है।

1026 में शुरू हुई मध्यकालीन बर्बरता ने आगे चलकर दूसरों को भी बार-बार सोमनाथ पर आक्रमण करने के लिए प्रेरित किया। यह हमारे लोगों और हमारी संस्कृति को गुलाम बनाने का प्रयास था। लेकिन हर बार जब मंदिर पर आक्रमण हुआ, तब हमारे पास ऐसे महान पुरुष और महिलाएं भी थीं जिन्होंने उसकी रक्षा के लिए खड़े होकर सर्वोच्च बलिदान दिया। और हर बार, पीढ़ी दर पीढ़ी, हमारी महान सभ्यता के लोगों ने खुद को संभाला, मंदिर को फिर से खड़ा किया और उसे पुन: जीवंत किया। महमूद गजनवी लूटकर चला गया, लेकिन सोमनाथ के प्रति हमारी भावना को हमसे छीन नहीं सका। सोमनाथ से जुड़ी हमारी आस्था, हमारा विश्वास और प्रबल हुआ। उसकी आत्मा लाखों श्रद्धालुओं की भीतर सांस लेती रही। साल 1026 के हजार साल बाद आज 2026 में भी सोमनाथ मंदिर दुनिया को संदेश दे रहा है, कि मिटाने की मानसिकता रखने वाले खत्म हो जाते हैं, जबकि सोमनाथ मंदिर आज हमारे विश्वास का मजबूत आधार बनकर खड़ा है। वो आज भी हमारी प्रेरणा का स्त्रोत है, वो आज भी हमारी शक्ति का पुंज है।

ये हमारा सौभाग्य है कि हमने उस धरती पर जीवन पाया है, जिसने देवी अहिल्याबाई होलकर जैसी महान विभूति को जन्म दिया। उन्होंने ये सुनिश्चित करने का पुण्य प्रयास किया कि श्रद्धालु सोमनाथ में पूजा कर सकें। 1890 के दशक में स्वामी विवेकानंद भी सोमनाथ आए थे, वो अनुभव उन्हें भीतर तक आंदोलित कर गया। 1897 में चेन्नई में दिए गए एक व्याख्यान के दौरान उन्होंने अपनी भावना व्यक्त की। उन्होंने कहा, दक्षिण भारत के प्राचीन मंदिर और गुजरात के सोमनाथ जैसे मंदिर आपको ज्ञान के अनगिनत पाठ सिखाएंगे। ये आपको किसी भी संख्या में पढ़ी गई पुस्तकों से अधिक हमारी सभ्यता की गहरी समझ देंगे।

इन मंदिरों पर सैकड़ों आक्रमणों के निशान हैं, और सैकड़ों बार इनका पुनर्जागरण हुआ है। ये बार बार नष्ट किए गए, और हर बार अपने ही खंडहरों से फिर खड़े हुए। पहले की तरह सशक्त। पहले की तरह जीवंत। यही राष्ट्रीय मन है, यही राष्ट्रीय जीवन धारा है। इसका अनुसरण आपको गौरव से भर देता है। इसको छोड़ देने का मतलब है, मृत्यु। इससे अलग हो जाने पर विनाश ही होगा। ये सर्वविदित है कि आजादी के बाद सोमनाथ मंदिर के पुनर्निर्माण का पवित्र दायित्व सरदार वल्लभभाई पटेल के सक्षम हाथों में आया। उन्होंने आगे बढ़कर इस दायित्व के लिए कदम बढ़ाया। 1947 में दीवाली के समय उनकी सोमनाथ यात्रा हुई। उस यात्रा के अनुभव ने उन्हें भीतर तक झकझोर दिया, उसी समय उन्होंने घोषणा की कि यहीं सोमनाथ मंदिर का पुनर्निर्माण होगा। अंतत: 11 मई 1951 को सोमनाथ में भव्य मंदिर के द्वार श्रद्धालुओं के लिए खोल दिए गए।

उस अवसर पर तत्कालीन राष्ट्रपति डॉ. राजेंद्र प्रसाद उपस्थित थे। महान सरदार साहब इस ऐतिहासिक दिन को देखने के लिए जीवित नहीं थे, लेकिन उनका सपना राष्ट्र के सामने साकार होकर भव्य रूप में उपस्थित था। तत्कालीन प्रधानमंत्री पंडित जवाहरलाल नेहरू इस घटना से अधिक उत्साहित नहीं थे। वो नहीं चाहते थे कि माननीय राष्ट्रपति और मंत्री इस समारोह का हिस्सा बनें। उन्होंने कहा कि इस घटना से भारत की छवि खराब होगी। लेकिन राजेंद्र बाबू अडिग रहे, और फिर जो हुआ, उसने एक नया इतिहास रच दिया।

सोमनाथ मंदिर का कोई भी उल्लेख के.एम. मुंशी जी के योगदानों को याद किए बिना अधूरा है। उन्होंने उस समय सरदार पटेल का प्रभावी रूप से समर्थन किया था। सोमनाथ पर उनका कार्य, विशेष रूप से उनकी पुस्तक 'सोमनाथ, द श्राइन इटरनल', अवश्य पढ़ी जानी चाहिए। जैसा कि मुंशी जी की पुस्तक के शीर्षक से स्पष्ट होता है, हम एक ऐसी सभ्यता हैं जो आत्मा और विचारों की अमरता में अटूट विश्वास रखती है। हम विश्वास करते हैं- नैनं छिन्दन्ति शस्त्राणि नैनं दहति पावक:। सोमनाथ का भौतिक ढांचा नष्ट हो गया, लेकिन उसकी चेतना अमर रही।

इन्हीं विचारों ने हमें हर कालखंड में, हर परिस्थिति में फिर से उठ खड़े होने, मजबूत बनने और आगे बढ़ने का सामर्थ्य दिया है। इन्हीं मूल्यों और हमारे लोगों के संकल्प की वजह से आज भारत पर दुनिया की नजर है। दुनिया भारत को आशा और विश्वास की दृष्टि से देख रही है। वो हमारे इनोवेटिव युवाओं में निवेश करना चाहती है। हमारी कला, हमारी संस्कृति, हमारा संगीत और हमारे अनेक पर्व आज वैश्विक पहचान बना रहे हैं। योग और आयुर्वेद जैसे विषय पूरी दुनिया में प्रभाव डाल रहे हैं। ये स्वस्थ जीवन को बढ़ावा दे रहे हैं। आज कई वैश्विक चुनौतियों के समाधान के लिए दुनिया भारत की ओर देख रही है। अनादि काल से सोमनाथ जीवन के हर क्षेत्र के लोगों को जोड़ता आया है। सदियों पहले जैन परंपरा के आदरणीय मुनि कलिकाल सर्वज्ञ हेमचंद्राचार्य यहां आए थे और कहा जाता है कि प्रार्थना के बाद उन्होंने कहा,

भवबीजाङ्कुरजनना रागाद्याः क्षयमुपगता यस्य।

अर्थात्, उस परम तत्व को नमन जिसमें सांसारिक बंधनों के बीज नष्ट हो चुके हैं। जिसमें राग और सभी विकार शांत हो गए हैं।

आज भी दादा सोमनाथ के दर्शन से ऐसी ही अनुभूति होती है। मन में एक ठहराव आ जाता है, आत्मा को अंदर तक कुछ स्पर्श करता है, जो अलौकिक है, अव्यक्त है। 1026 के पहले आक्रमण के एक हजार वर्ष बाद 2026 में भी सोमनाथ का समुद्र उसी तीव्रता से गर्जना करता है और तट को स्पर्श करती लहरें उसकी पूरी गाथा सुनाती हैं। उन लहरों की तरह सोमनाथ बार-बार उठता रहा है। अतीत के आक्रमणकारी आज समय की धूल बन चुके हैं। उनका नाम अब विनाश के प्रतीक के तौर पर लिया जाता है। इतिहास के पन्नों में वे केवल फुटनोट हैं, जबकि सोमनाथ आज भी अपनी आशा बिखेरता हुआ प्रकाशमान खड़ा है। सोमनाथ हमें ये बताता है कि घृणा और कट्टरता में विनाश की विकृत ताकत हो सकती है, लेकिन आस्था में सृजन की शक्ति होती है। करोड़ों श्रद्धालुओं के लिए सोमनाथ आज भी आशा का अनंत नाद है। ये विश्वास का वो स्वर है, जो टूटने के बाद भी उठने की प्रेरणा देता है।

अगर हजार साल पहले खंडित हुआ सोमनाथ मंदिर अपने पूरे वैभव के साथ फिर से खड़ा हो सकता है, तो हम हजार साल पहले का समृद्ध भारत भी बना सकते हैं। आइए, इसी प्रेरणा के साथ हम आगे बढ़ते हैं। एक नए संकल्प के साथ, एक विकसित भारत के निर्माण के लिए। एक ऐसा भारत, जिसका सभ्यतागत ज्ञान हमें विश्व कल्याण के लिए प्रयास करते रहने की प्रेरणा देता है।

जय सोमनाथ !

नरेन्द्र मोदी, प्रधानमंत्री

राजस्थान का शैक्षणिक संकट : वेंटिलेटर पर विश्वविद्यालय

अशोक कुमार

राजस्थान के शैक्षणिक परिदृश्य से संबन्धित 27 दिसम्बर 2025 को दैनिक भास्कर मे अर्पित शर्मा की एक रिपोर्ट चौंकाने वाली और विचलित करने वाली है। रिपोर्ट के अनुसार, प्रदेश के 18 सरकारी विश्वविद्यालयों में से 10 विश्वविद्यालय ऐसे हैं जहाँ 100 प्रतिशत पद खाली हैं। इसका सीधा अर्थ यह है कि इन संस्थानों में एक भी नियमित शिक्षक या कर्मचारी तैनात नहीं है। शेष विश्वविद्यालयों की स्थिति भी संतोषजनक नहीं है, क्योंकि वे भी केवल 40 प्रतिशत स्टाफ के भरोसे जैसे-तैसे चल रहे हैं। यह स्थिति न केवल प्रशासनिक विफलता को दर्शाती है, बल्कि उन लाखों छात्रों के भविष्य के साथ खिलवाड़ भी है जो बेहतर कल की उम्मीद में इन संस्थानों में प्रवेश लेते हैं।

सबसे बड़ी विडंबना यह है कि इनमें से कुछ विश्वविद्यालय राष्ट्रीय मूल्यांकन और प्रत्यायन परिषद द्वारा ए प्लस ग्रेड प्राप्त हैं। नैक ग्रेडिंग किसी संस्थान की गुणवत्ता, शोध और बुनियादी ढांचे का पैमाना होती है। यदि ए प्लस ग्रेड वाले संस्थानों में भी शिक्षकों के 60 प्रतिशत से 100 प्रतिशत पद खाली हैं, तो यह दो बड़े सवाल खड़े करता है:-

पहला, क्या ये ग्रेडिंग केवल कागजी आंकड़ों और पुराने रिकॉर्ड्स के आधार पर दी गई है? दूसरा, बिना नियमित फैकल्टी के ये संस्थान अपनी गुणवत्ता को आने वाले समय में कैसे बरकरार रख पाएंगे? बिना शिक्षकों के शोध और नवाचार की कल्पना करना असंभव है। एक उच्च शिक्षण संस्थान केवल ईंट-गारे की इमारत नहीं, बल्कि विचारों का आदान-प्रदान करने वाला जीवंत केंद्र होता है, जो शिक्षकों के बिना मृतप्राय है।

राजस्थान विश्वविद्यालय से लेकर तकनीकी संस्थानों तक प्रदेश के सबसे प्रतिष्ठित राजस्थान विश्वविद्यालय में टीचिंग के 1016 स्वीकृत पदों में से 608 पद खाली हैं। वहीं नॉन-टीचिंग के 1692 में से 1034 पद खाली हैं।

अन्य संस्थानों की स्थिति और भी भयावह है: एमबीएम विश्वविद्यालय, जोधपुर: यहाँ टीचिंग के 147 और नॉन-टीचिंग के 253 पदों में से सभी (100 प्रतिशत) पद खाली हैं। यह एक तकनीकी विश्वविद्यालय है जहाँ प्रयोगात्मक ज्ञान की सबसे अधिक आवश्यकता होती है। लॉ यूनिवर्सिटी और कोटा यूनिवर्सिटी: यहाँ भी रिक्त पदों का प्रतिशत शत-प्रतिशत के करीब है। संस्कृत विश्वविद्यालय: जहाँ अक्टूबर 2024 में भर्ती की स्वीकृति मिली थी, वहां भी परिणाम शून्य रहा है।

रिक्तियों का कारण केवल पदों की कमी नहीं है, बल्कि प्रशासनिक जटिलताएं और इच्छाशक्ति का अभाव है। भर्ती की प्रक्रिया कहीं रोस्टर प्रणाली के विवाद में फंसी है, तो कहीं वित्तीय और प्रशासनिक स्वीकृति की फाइलों में दबी हुई है। सिंडिकेट से प्रस्ताव पारित न होना और सरकार द्वारा समय पर नियुक्तियां न करना, शिक्षा व्यवस्था को पंगु बना रहा है। पिछले दो वर्षों से कई संस्थानों में कोई नई भर्ती नहीं हुई है, जबकि छात्र संख्या निरंतर बढ़ रही है। कोठारी कमीशन के अनुसार, एक आदर्श शिक्षण व्यवस्था में शिक्षक-छात्र अनुपात 1:20 होना चाहिए। लेकिन राजस्थान के इन विश्वविद्यालयों में यह अनुपात पूरी तरह ध्वस्त हो चुका है। जब शिक्षक ही नहीं होंगे, तो:

गुणवत्तापूर्ण शिक्षा: छात्रों को केवल डिग्रियां बांटी जा रही हैं, ज्ञान नहीं। बिना क्लासरूम टीचिंग के छात्र केवल गाइड और शॉर्ट-कट्स के भरोसे परीक्षा पास कर रहे हैं।

नई शिक्षा नीति कौशल विकास, अंत: विषय शिक्षा और शोध पर जोर देती है। इसे लागू करने के लिए अधिक ऊर्जावान और स्थायी शिक्षकों की आवश्यकता है। बिना स्टाफ के केवल एक कागजी दस्तावेज बनकर रह जाएगी। नियमित शिक्षकों के अभाव में गेस्ट फैकल्टी या संविदा कर्मियों से काम चलाया जाता है, जिससे शिक्षा में निरंतरता की कमी आती है और छात्रों का भविष्य अनिश्चितता में रहता है। तदर्थ व्यवस्था का मोह: सरकारें स्थायी भर्ती के भारी वित्तीय बोझ से बचने के लिए गेस्ट फैकल्टी या विद्या संबल जैसी योजनाओं पर निर्भर हो गई हैं। ये शिक्षक मेहनती हो सकते हैं, लेकिन संस्थान के प्रति उनकी कोई दीर्घकालिक जवाबदेही नहीं होती और न ही वे शोध कार्यों में योगदान दे पाते हैं।

भारत सरकार नई शिक्षा नीति 2020 के माध्यम से शिक्षा में क्रांतिकारी बदलाव का दावा कर रही है। राजस्थान में भी इसे लागू करने की तैयारी है। लेकिन वास्तविकता यह है कि बिना शिक्षकों के केवल एक कागजी पुलिंदा है।

बहु-विषयक शिक्षा: एनइपी के तहत छात्र अलग-अलग विषयों का चुनाव कर सकते हैं, लेकिन जब मूल विषयों के ही शिक्षक नहीं हैं, तो ऐच्छिक विषयों को कौन पढ़ाएगा?

यदि सरकार और विश्वविद्यालय प्रशासन वाकई शिक्षा के स्तर को सुधारना चाहते हैं, तो निम्नलिखित कदम उठाने अनिवार्य हैं:

मिशन मोड में भर्ती: अगले 6 महीनों के भीतर सभी रिक्त पदों को भरने के लिए एक विशेष अभियान एनइपी चलाया जाना चाहिए। रोस्टर और वित्तीय स्वीकृतियों की बाधाओं को दूर करने के लिए एकल खिड़की प्रणाली अपनाई जाए।

तदर्थ नियुक्तियों पर रोक: केवल कामचलाऊ व्यवस्था के बजाय स्थायी नियुक्तियों पर ध्यान दिया जाए ताकि शिक्षकों की जवाबदेही तय हो सके।भर्ती प्रक्रियाओं में देरी के लिए जिम्मेदार अधिकारियों की जवाबदेही तय की जानी चाहिए।

विश्वविद्यालय केवल डिग्री बांटने वाले कारखाने नहीं बनने चाहिए। यदि जल्द ही इन रिक्त पदों को नहीं भरा गया, तो प्रदेश के युवाओं की बौद्धिक क्षमता और रोजगार की संभावनाओं को अपूरणीय क्षित होगी। ए प्लस ग्रेड की चमक तब तक फीकी रहेगी जब तक कि क्लासरूम में शिक्षक और छात्र के बीच संवाद नहीं होगा।

–अशोक कुमार,
पूर्व कुलपति कानपुर,
गोरखपुर विश्वविद्यालय,
विभागाध्यक्ष राजस्थान
विश्वविद्यालय जयपुर

राशिफल

पंडित अनिल शर्मा

सोमवार 5 जनवरी, 2026

माघ मास, कृष्ण पक्ष, द्वितीया तिथि, सोमवार, विक्रम संवत 2082, पुष्य नक्षत्र दिन 1:25 तक, विष्कुम्भ योग रात्रि 10:47 तक, गर करण प्रात: 4:57 तक, चन्द्रमा आज कर्क राशि में संचार करेगा।

ग्रह स्थिति: सूर्य-धनु, चन्द्रमा-कर्क, मंगल-धनु, बुध-धनु, गुरू-मिथुन, शुक्र-धनु, शनि-मीन, राहु-कुम्भ, केतु-सिंह राशि में।

आज सर्वार्थ सिद्धि योग दिन 1:25 तक है। भद्रा रात्रि 8:59 से आरम्भ होगी।

श्रेष्ठ चौघड़िया: अमृत सूर्योदय से 8:39 तक, शुभ 9:56 से 11:14 तक, चर 1:50 से 3:08 तक, लाभ-अमृत 3:08 से सूर्यास्त तक।

राहूकाल: 7:30 से 9:00 तक। सूर्योदय 7:21, सूर्यास्त 5:43

मेष

घर-परिवार में सुख-शांति बनी रहेगी। सुख-सुविधाएं बढ़ेगी। परिवार में महत्वपूर्ण कार्य सम्पन्न हो सकते हैं। घर-परिवार में अतिथियों के आगमन से उत्सव जैसा माहौल रहेगा।

वृष

परिवार में मन को प्रसन्न करने वाले संदेश प्राप्त होंगे। मित्रों के सहयोग से वर्तमान समस्या का समाधान हो सकता है। व्यावसायिक कार्यों में प्रगति होगी। व्यावसायिक आय में वृद्धि होगी।

मिथुन

आर्थिक कारणों से अटके हुए कार्य बनने लगेंगे। संभावित स्त्रोत से धन प्राप्त होगा। आय में वृद्धि होगी। व्यावसायिक कार्यों में व्यस्तता बनी रहेगी।

कर्क

मानसिक तनाव से राहत मिलेगी। मन: स्थिति में सुधार होगा। मनोबल-आत्मविश्वास बढ़ेगा। आज महत्वपूर्ण कार्य योजना का क्रियान्वयन होगा। व्यावसायिक/आर्थिक स्थिति ठीक रहेगी।

सिंह

घर-गृहस्थी के खर्चों में अनावश्यक वृद्धि हो सकती है। पारिवारिक कार्यों के कारण भागदौड़ रहेगी। आज समय अनर्गल कार्यों में खराब हो सकता है। मन में असंतोष बना रहेगा।

कन्या

आर्थिक/वित्तीय मामलों के लिए दिन अच्छा रहेगा। आय में वृद्धि होगी और अटका हुआ धन प्राप्त होगा। व्यावसायिक स्थिति ठीक रहेगी। परिवार में मनोरंजन के कार्यक्रम बन सकते हैं।

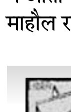

तुला

व्यावसायिक कार्यों को प्राथमिकता से करने का प्रयास करें। अटके हुए कार्य बनने लगेंगे। व्यावसायिक सफलता से मनोबल बढ़ेगा। परिचितों के सहयोग से वर्तमान समस्या का समाधान हो सकता है।

वृश्चिक

नवीन कार्यों के संबंध में शुभ संदेश प्राप्त होंगे। अटके हुए कार्य बनने लगेंगे। धार्मिक कार्यों में भाग ले सकते हैं। व्यावसायिक/आर्थिक स्थिति ठीक रहेगी।

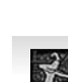

धनु

चन्द्रमा अष्टम भाव में शुभ नहीं है। शुभ कार्यों में व्यवधान हो सकता है। आवश्यक कार्यों में विलम्ब हो सकता है। बनते कार्य बिगड़ सकते हैं। स्वभाव पर नियंत्रण रखें।

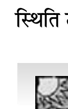

मकर

परिवार में उत्सव जैसा माहौल रहेगा। परिवार में धार्मिक-मांगलिक कार्य सम्पन्न हो सकते हैं। परिवार में आपसी सहयोग-समन्वय बना रहेगा। व्यावसायिक यात्रा संभव है।

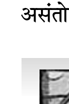

कुंभ

विवादित मामलों से राहत मिल सकती है। अस्त-व्यस्त दिनचर्या में सुधार होगा। अनहोनी की आशंका से बना हुआ मन का भय समाप्त होगा। स्वास्थ्य में सुधार होगा।

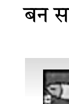

मीन

व्यावसायिक कार्यों से संबंधित प्रयासों में उचित सफलता मिलेगी। व्यावसायिक कार्य योजना का क्रियान्वयन होगा। नौकरीपेशा व्यक्तियों को महत्वपूर्ण जिम्मेदारी मिल सकती है। आर्थिक स्थिति ठीक रहेगी।